जोलों न काढ़ूं विकार, तोलों क्यों करके जगाए।
जागे बिना इन रास के, किन निज सुख लिए न जाए।। २२ ।।

जब तक सुन्दरसाथ के माया रूपी चाहनाओं के विकार को नहीं निकालूंगी, तब तक सुन्दरसाथ कैसे जागेगा? जब तक जागेंगे नहीं, तब तक इस अखण्ड आनन्द का सुख कोई नहीं ले सकेगा।

आमले उलटे मोह के, और मोह तो तिमर घोर।
ए घोर रैन टालूं या बिध, ज्यों सब कोई कहे भयो भोर।। २३ ।।

मोह माया के रास्ते उलटे हैं। मोह माया तो घोर अन्धकार है। इस घोर अन्धकार को तारतम वाणी से इस तरह से मिटा दूंगी जिससे सभी को ही ज्ञान का सवेरा हो जाए।

गुन पख अंग इन्द्री उलटे, करत हैं सब जोर।
सो सब टेढ़े टाल के, कर देऊं सीधे दोर।। २४ ।।

इस सांसारिक तनों के गुण पक्ष, अंग, इन्द्रिय तो सभी उल्टे माया की तरफ ही खींचते हैं। उन सबकी उल्टी माया वाली चाहना हटाकर सीधे रास्ते धनी के अखण्ड सुखों की चाहना में लगा दूंगी।

अहंकार मन चित्त बुध, इन किए सब जेर।
अब हारे सब जिताए के, फेरूं सो सुलटे फेर।। २५ ।।

संसार के तनों के अहंकार, मन, चित्त और बुद्धि को माया ने अपने अधीन कर रखा है। ऐसे हारे हुए सब अन्तःकरण को अपने बल से जिताकर सीधे रास्ते पर लगा दूंगी।

प्रकृत सबे पिंड की, सीधी करूं सनमुख।
दुख अगनी टाल के, देखाऊं ते अखंड सुख।। २६ ।।

इस शरीर की सभी प्रकृतियों को माया की तरफ से हटाकर परब्रह्म की तरफ सीधा कर दूंगी और तब इस दुःख की आग से हटाकर उनको अखण्ड सुख दूंगी।

चोर फेर करूं बोलावे, सुख सीतल करूं संसार।
अंग में सबों आनन्द, होसी हरख तुमे अपार।। २७ ।।

तन के इन सभी गुण, अंग, इन्द्रिय, आदि चोरों को सीधे रास्ते पर लाकर सारे संसार को सुखी और शीतल कर दूंगी। सबके अंग-अंग में आनन्द भर जाने से, सुन्दरसाथजी! आपको अपार आनन्द होगा।

कोईक दिन साथ मोह के जल में, लेहेर बिना पछटाने।
कहे महामती प्यारी मोहे वासना, न सहूं मुख करमाने।। २८ ।।

कुछ दिन तक तो सुन्दरसाथ माया के चक्कर में बिना पानी के डूबते रहे। अब महामतिजी कहती हैं कि मुझे सुन्दरसाथ प्यारे हैं। मैं उनके मुरझाए मुख को भी नहीं देख सकती।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ५९८ ।।

हांसी का प्रकरण

मेरे साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसी का है ठौर।
पिउ वतन आप भूल के, कहा देखत हो और।। १ ।।

मेरे परमधाम के सम्बन्धी सुन्दरसाथ! सावधान हो जाओ। यह हंसी का ठिकाना है। अपने धनी के अखण्ड घर को और अपने आप को भूलकर संसार में क्या देख रहे हो?

Nijanand App

साथ जी तुमको उपज्या, खेल देखन का ख्याल।
जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए हांसी का हवाल।। २ ।।

हे साथजी! तुमको खेल देखने की चाहना पैदा हुई थी। इस माया ने, जिसका मूल ही नहीं है, तुमको बांध रखा है। यह ऐसी हांसी (हंसी) का हवाल है (ठिकाना है)।

मांग्या खेल विनोद का, तिन फेरे तुमारे मन।
सो सब तुमको विसरे, जो कहे मूल वचन।। ३ ।।

तुमने तो आनन्द के लिए खेल मांगा था, पर इस माया ने तुम्हारे मन को उलटा कर अपने में फंसा दिया है और तुम अपने मूल वचनों को भूल बैठे हो।

गूंथो जाली दोरी बिना, आप बांधत हो अंग।
अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग।। ४ ।।

इस माया में बिना डोरी के झूठे परिवारों की जाली को गूंथ रहे हो और स्वयं ही अपने अंगों को फंसा रहे हो। तुम्हारे अंग भी यहां नहीं हैं (परमधाम में हैं) फिर भी तड़प रहे हो। यह इस माया का जाल है।

आप बंधाने आप सों, इन कोहेड़े अंधेर।
अमल चढ़्या जानों जेहेर का, फिरत वाही में फेर।। ५ ।।

तुम अपने आप को पारिवारिक (बिरादरी के) झूठे जाल में बांधे बैठे हो। इस झूठी माया का ऐसा जहरीला नशा चढ़ा है जिसके चक्कर में तुम भटक रहे हो।

अमल चढ़्या क्यों जानिए, कोई फिसले कोई गिरे।
कोई मिने जाग के, कर पकर सीढ़ी चढ़े।। ६ ।।

कैसे समझा जाए कि नशा चढ़ा है? कोई ईमान से गिरता है। किसी का ईमान डगमगाता है तथा कोई जागृत होकर एक-दूसरे के सहारे से होश में आता है।

एक गिरे पगथी बिना, वाको दूजी पकरे कर।
सो खाए दोनों गड़थले, ए हांसी है या पर।। ७ ।।

कोई यहां बिना सीढ़ी के ही गिर जाते हैं। उसको दूसरा साथी धर्म, ज्ञान, योग, आदि से उठाता है। वह दोनों भवसागर में ही उलट कर गिर पड़ते है। यह खेल इस तरीके का है।

एक पड़ी जिमी जान के, वाको दूजी उठावन जात।
उलट पड़ी सो उलटी, ए खेल है या भांत।। ८ ।।

यहां एक तो धर्म को ही जानकर उस पर चलता है और दूसरा ज्ञानी बनकर उसे ज्ञान देकर उठाता है। तो वह दोनों झूठे ज्ञान के कारण उलटे मुंह नीचे गिर जाते हैं। इस तरह से यह सारा माया का खेल है।

ओठा लेवे जिमी बिना, पांव बिना दोड़ी जाए।
जल बिना भवसागर, यामें गलचुए खाए।। ९ ।।

यहां सपने के संसार में जीव कर्मकाण्ड के धर्म का सहारा लेकर बैठा है और बिना पांव के (मन से) इधर-उधर भटकता है तथा बिना पानी के भवसागर में गोते खा रहा है, अर्थात् जन्म-मरण के चक्कर में फंसा है।

Nijanand App

देखो अंत्रीख खड़ियां, हाथ बिना हथियार।
नींद बड़ी है जागते, पिंड बिना आकार।। १० ।।

यह ब्रह्माण्ड अद्धर में लटका है जिसमें तुम हाथ-पैर पटक रहे हो। जागते हुए भी माया की नींद छाई है। मूल शरीर के (मूल तन परमधाम में है) झूठे तन बनाए बैठे हो।

एक नई कोई आए मिले, सो कहावे आप अजान।
बड़ी होए दूजी मिने, समझावत सुजान।। ११ ।।

यहां कोई नया साधु, सन्त, विद्वान या ज्ञानी मिल जाता है, तो अपने को अनजाना बताता है और फिर दूसरों के बीच में खुद जानकार बनकर ज्ञान देने लगता है।

कोई वचन करड़े कहे, किन खण्डनी न खमाए।
सो कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाए।। १२ ।।

कोई ज्ञानी जन किसी का खण्डन कर अवगुण बताते हैं। किसी से यह वचन सहन नहीं होते हैं। यह दोनों रोते हुए माया में ही गिर जाते हैं। इस तरह से माया का नशा सबको चढ़ा है।

खंडी खांडी रोए रोलाए, दुख देखे दोऊ जन।
जागे पीछे जो देखिए, तो कमी न मांहें किन।। १३ ।।

कठिन खण्डनी के वचन कहकर तथा सुनकर दोनों दुःखी होते हैं और होश आने पर दोनों देखते हैं तो कमी कहने वाले में या सुनने वाले में नहीं दिखाई देती। यह तो माया के कारण ही अनुभव होता है।

हांसी होसी साथ में, इन खेल के रस रंग।
पूर बिना बहे जात हैं, कोई आड़ी होत अभंग।। १४ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि इस तरह से खेल के आनन्द की बातें सुन्दरसाथ परमधाम में हंस-हंस कर करेंगे। यहां जल का तो कोई बहाव है नहीं फिर भी माया की चाहना (तृष्णा) और ममता रूपी लहरों में बहे जाते हैं। इसमें कोई विद्वान अपने को जानकर, समझकर बचाने का प्रयत्न भी करते हैं।

हरखे हांसी हेत में, करसी साथ कलोल।
मांगी माया सो देखी नीके, कोई ना हांसी या तोल।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि परमधाम में जागे, पीछे सुन्दरसाथ परस्पर आपस में हंसी के आनन्द में कलोल करेंगे। यह माया जो हमने मांगी थी उसे अच्छी तरह से देख लिया है। इसकी बराबरी में और कोई हंसी हो ही नहीं सकती है।

मूल बिना ए बिरिख खड़ा, ताको फल चाहे सब कोए।
फेर फेर लेने दौड़ही, ए हांसी इन बिध होए।। १६ ।।

यह माया रूपी विराट का वृक्ष बिना जड़ के खड़ा है और सभी इससे धर्म और मोक्ष रूपी फल की चाहना रखते हैं। इस फल को लेने के लिए सभी दौड़ते हैं, परन्तु काम, क्रोध और अहंकार के कारण पीछे गिर जाते हैं और इस तरह से हंसी होती है।

ए खेल देख्या छल का, बैकुंठ लो पाताल।
फल फूल पात ना दरखत, काष्ट तुचा मूल ना डाल।। १७ ।।

बैकुण्ठ से पाताल तक यह सब खेल छल से भरा हुआ देखा जिसमें फल, फूल, पत्ते, पेड़, लकड़ी, छाल, जड़ और डालियां नहीं हैं, अर्थात् यहां किसी को किसी से कुछ नहीं मिलता।

Nijanand App

खुले ना बंध बिना बांधे, बिध बिध खोले जाए।
ए माया मोहोरे देख के, उरझ रहे सब मांहें।। १८ ।।

यह परिवार के, बिना बंधे हुए बन्धन तरह-तरह के प्रयत्न करने पर भी नहीं छूटते। इस संसार के जीव मोह के बन्धन में बंधे हुए परस्पर एक-दूसरे में उलझे हुए हैं। इसे तो कोई बांधने वाला ही खोल सकता है।

जागो जगाऊं जुगत सों, छोड़ो नींद विकार।
पेहेचान कराऊं पिउ सों, सुफल करूं अवतार।। १९ ।।

महामतिजी कहती हैं, सुन्दरसाथजी! जागृत हो जाओ। मैं तुम्हें तारतम वाणी के ज्ञान से जगाती हूं। तुम माया की चाहना रूपी विकारों को छोड़ दो और अपने प्रीतम धनी को पहचानो, तो मेरा भी जीवन सफल हो जाए। आपको पहचान कराने पर ही मेरा भी जीवन सफल होगा।

वतन देखाऊं पिउ का, और अपनी मूल पेहेचान।
एह उजाला करके, धोखा देऊं सब भान।। २० ।।

हे सुन्दरसाथजी! आओ अपने धनी और वतन की पहचान कराती हूं। तारतम वाणी के ज्ञान से तुम्हारे मन के संशय मिटा दूंगी।

ए भोम हांसी देख के, आप होत सावचेत।
मूल सुख कहे महामती, तुमको जगाए के देत।। २१ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम इस हांसी (हंसी) की भूमि को देखकर सावधान हो जाओ जिससे तारतम वाणी के ज्ञान से तुम्हें जगाकर परमधाम के मूल सुख तुम्हें दिखाऊं।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ६१९ ।।

जागनी का प्रकरण

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे सुन्दरसाथजी! अब तुम जागकर (सावचेत होकर) जागनी के ब्रह्माण्ड के सुखों को देखो। यह सुख ब्रह्मसृष्टियों के ही लायक है। इस जागनी की लीला में बृज, रास, जागनी की लीला तथा चौथा परमधाम का अखण्ड सुख का आनन्द मिलता है।

कह्या न जाए सुख जागनी, सत ठौर के सनेह।
तो भी कहूं जिमी माफक, नेक प्रकासूं एह।। २ ।।

जागनी के सुखों का वर्णन कहने में नहीं आता। इसमें अपने मूल घर परमधाम की पहचान होती है। फिर भी इस जमीन के अनुसार थोड़ा सा जाहिर करती हूं।

अब जगाऊं जुगत सों, उड़ाऊं सब विकार।
रंगे रास रमाए के, सुफल करूं अवतार।। ३ ।।

अब मैं बड़ी युक्ति से तुम्हें जगाऊंगी और तुम्हारे सभी विकारों को दूर कर दूंगी। फिर आनन्द में विभोर करूंगी और संसार में अपना आना सफल करूंगी।

Nijanand App